Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

संगीत जीवन की संजीवनी :विविध द्रष्टि से अध्ययन

रामू विश्वकर्मा
शोधार्थी , संगीत विभाग , डॉ.हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर म.प्र.

प्रस्तावना :

संगीत एक व्यापक शब्द है, गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों मिलकर संगीत कहलाते है, और नृत्य गीत-वाद्य दोनों का अनुशरण करता है। अतः संगीत शब्द में गीत वाद्य-नृत्य अर्थात् भाव-लय-शब्द तीनों समाहित हैं, तभी संगीत पूर्णतः को प्राप्त होता है। मानव जीवन में संगीत हमेशा ही रहता है। यहां संगीत से तात्पर्य केवल शास्त्रीय संगीत नृत्य से न होकर संगीत के समस्त प्रकार से है। प्रत्येक मानव की अपनी-अपनी पसंद समझ एवं सुखानुभूति एक जैसी नहीं होती है, उसे वही संगीत अच्छा लगता है जो उसे आनन्द देता है। संगीत में भाव संगीत, लोक संगीत, गीत, ग़ज़ल, शास्त्रीय, उपशास्त्रीय संगीत की अनेक शैलियां, चित्रपट-संगीत, पाश्चात्य संगीत, वाद्य संगीत आदि कितनी ही विधाएं संगीत के शब्द के अंतर्गत आती हैं। अतः जब हम मानव जीवन में संगीत का विचार करते हैं तब हमारा दृष्टिकोण बहुत व्यापक हो जाता है। मानव जीवन में संगीत का क्या प्रयोजन है? लौकिक दृष्टि से अथवा सामान्य दृष्टि से विचार करने पर एक ही उत्तर सामने आता है, कि मनुष्य कुछ क्षण के लिए अपने आप को विस्मृत करने के लिए गीत-संगीत-नृत्य में खो जाता है। उससे आनंद उठाता है, कभी अकेले अथवा कभी सामूहिक रूप से कभी श्रोता या प्रेक्षक बनकर अथवा कभी उसमें सम्मलित होकर। सांगीतिक उत्सव का समापन देखकर मनुष्य प्रसन्नचित्त

उत्साह से भरे घर वापिस आते हैं, फिर अपने दैनदिन कार्यक्रम में व्यस्त हो जाते हैं। आम लोगों के लिए संगीत की यही परिभाषा है, यहां अर्थ है और यही प्राप्य है।

परन्तु मेरा यह लेख लिखने का उद्देश्य मानव जीवन में संगीत के अन्य पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित करना है। संगीत के विभिन्न पक्ष ऐसे हैं जो मानव जीवन के लिए कल्याणकारी है। जैसे- संगीत का आध्यात्मिक पक्ष, सांस्कृतिक पक्ष, मनोवैज्ञानिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष, चिकित्सकीय पक्ष एवं व्यावसायिक पक्ष और एक जो मानव जीवन से नहीं अपितु जिनमें जीवन है उनसे संबंधित है जैसे- पेड़ पौधे, पशु-पक्षी आदि। इनको भी संगीत अच्छे अर्थ में प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त भी संगीत द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन, राष्ट्रीय एकता, मध्ययुग में हुए भक्ति आन्दोलन जो संगीत के माध्यम के बिना हो नहीं सकता था, जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। अतः ऊपर दर्शाये कतिपय बिन्दुओं से एवं और भी अन्य कारणों से हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का संगीत से अटूट संबंध है, क्योंकि वह तो प्रकृति द्वारा ही प्राणी मात्र को प्राप्त है। संगीत हर प्रकार से मानव के लिए कल्याणकारी ही है। अब मैं यहां उपर्लिखित संगीत के अनेक दृष्टिकोण को स्पष्ट करना चाहता हूं।

संगीत का चिकित्सकीय पक्षः-जिस प्रकार मनुष्य एक स्थूल शरीरधारी एवं सूक्ष्म मन, हृदय, बुद्धिधारी जीव है, उसी प्रकार प्रत्येक राग एक दिव्य शरीरधारी देव है। स्वर,लय, ताल,बन्दिशें इत्यादि राग का शरीर हैं एवं इनसे निर्माण होने वाला रस एवं रस से निर्माण होने वाला आनन्द ही इसका सूक्ष्म शरीर है संगीत शास्त्र में प्रत्येक स्वर का रंग, देवीय कला और रस एवं तद्नुसार उसका रूप निश्चित माना गया है। जैसे षड़ज का रंग गुलाबी है, वह कमल के समान मन को प्रसन्न करने वाला है। इस स्वर में वीर और अद्भुत रस है। यहां इस विषय पर अधिक चर्चा उचित नहीं होगी। परन्तु एक उदाहरण मात्र इसलिए दिया कि इस प्रकार स्वर और अनेक स्वरों से निर्मित राग किस प्रकार शरीर पर प्रभाव डालने में सक्षम होते हैं। अनेक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि राग प्राकृतिक तत्वों को प्रभावित करने में सक्षम है। उसमें जड़ तथा चेतन दोनों को प्रभावित करने की क्षमता है।

रागों के द्वारा मनुष्य की चिकित्सा की जाती है। उसका मूल तत्व है, राग से निर्मित होने वाला रस। प्रत्येक राग एक विशिष्ट प्रकार की उत्पत्ति करता है, जो मनुष्य के मन पर भिन्न-भिन्न प्रकार से परिणाम करती हैं इसकी चिकित्सा अंग्रेजी दवा जैसे शीघ्र परिणाम दिखाने वाली नहीं है, अपितु बहुत व्यवस्थित ढ़ंग से एवं नियमित रूप से इसकी चिकित्सा की जाती है, ग्रेसीमूविच जी.आई.,ईन्श,ई.ए. (१९९९)। शरीर विज्ञान के ज्ञाता जानते हैं कि शरीर में नौ चक्र हैं, उनमें ब्रह्मण्ड के चक्र में जीवन शान्ति संचित रहती है, इस स्थान को अमृत कुण्ड भी कहते हैं। यही है जीवन रस जो कि एक चिपचिपेदार पानी की तरह तरल पदार्थ है जो झरता रहता है, जब यह रस किसी कारण कम झरता है तब मनुष्य के मन और शरीर में निर्बलता आती है, तभी अनेक रोग शरीर में निर्मित होते हैं। संगीत की चिकित्सा में रोगों के अनुसार निर्धारित राग रोगी की आत्मा पर सीधा प्रभाव डालता है। रोगी की आत्म संतुष्टि से जीवन शक्ति उत्पन्न होकर रोगी स्वस्थ्य होता है। संगीत से मन सम्बंधित रोगों का ही उपचार संभव है। संगीत आत्मजीवन शक्ति प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। हृदय और मस्तिष्क के रोग जैसे- पागलपन,डिप्टीरिया आदि

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

बीमारियाँ राग उपचार से ठीक किये गये हैं। सिर दर्द, ताप, ज्वर, रक्तभार, अनिद्रा, क्षय,श्वांस आदि रोगों पर संगीत का सफल प्रयोग इस युग में किये जा चुका है। निम्नांकित रागों की अवतारणा से निम्न रोग शान्त होते हैं–

रोग	राग
पागलपन	बहार, बागेश्वरी
सिरदर्द	बिहाग, धानी
रक्तभार	पूर्वी, तोड़ी
हिस्टीरिया	खमाज, दरबारी कान्हड़ा, पूरिया
क्षयरोग	तिलंग, बिलावल, मुल्तानी, रामकली

अनेक वाद्यों द्वारा भी संगीत चिकित्सा होती है– सारंगी और सितार चिकित्सा की दृष्टि से अधिक प्रभावशाली है। सितार की मींड (स्वर निकालने की विधि) रोगी के गिरते या दबते हृदय को ऊपर खींच कर अथवा हृदय बैठने से उसे बचाती है। सितार की निरन्तर तार की झंकार अनिद्रा को दूर कर देती है। सारंगी पागलपन दूर करने में सक्षम है। हाथ से बजने वाले वाद्यों से हाथ के जोड़ कंधे आदि मजबूत होकर स्पान्डिलाइरिस जैसे रोगों को दूर करती है। फूंक के वाद्य से हृदय बलवान होता है, एवं जबडे का अच्छा व्यायाम होता है, कंठ संगीतज्ञों को हृदय रोग कभी नहीं होता। नियमित स्वर साधना से उनका हृदय अत्यंत बलशाली होता है। नृत्य साधक का तो सम्पूर्ण शारीरिक व्यायाम होकर शरीर सुदृढ़ रहता है। इस प्रकार शारीरिक और मानसिक रूप से संगीत द्वारा मनुष्य के अनेक रोगों का उपचार संभव है। आपने सुना होगा एक प्रयोग द्वारा संगीत के कारण गाय अधिक दूध देने लगी थी। दक्षिण के एक किसान ने अपने खेतों में लाऊड स्पीकर पर भक्ति संगीत के प्रसारण से अधिक मात्रा में उपज की थी। यह दो प्रयोग तो अभी–अभी सुरभि कार्यक्रम पर दिखाये गये थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि संगीत तो मनुष्य के लिए वास्तव में इस तरह से लाभदायी है।

जे.ऐन्ने एवं सहयोगी (१९९९) के अनुसार म्यूजिक हमें मानसिक मजबूती देता है।बच्चों को म्यूजिक सूनाया जाए तो उनके सीखने क्षमताएं बढ़ जाती हैं ।म्यूजिक सुनने से दिमाग पर पोजिटिव असर होता है।मन को सुकून देने के अलावा संगीत दिल की सेहत के लिए भी असरदार है।एक शोध के अनुसार संगीत दिल की बीमारी से जूझ रहे मरीजों को राहत देने में मददगार है।इसके तहत ७४ मरीजों पर किये गये शोध में हृदय सम्बंधी समस्याओं के मरीजों को तीन समूहों में बाटा गया।इनमे से पहले समूह को प्रतिदिन तीस मिनिट व्यायाम करने की सलाह दी गई,तो वहीं दूसरे समूह को रोजाना तीस मिनिट अपना पसंदीदा संगीत सुनने को कहा गया। तीसरे समूह को व्यायाम के साथ–साथ अपना पसंदीदा संगीत सुनने व बजाने की सलाह दी गई। अंत में पाया गया कि तीसरे समूह के मरीजों में व्यायाम करने की क्षमता ३९ प्रतिशत तक बढ़ गई और हृदय सम्बंधी समस्याओं में काफी सुधार भी आया है।व्यायाम करने वाले समूह में २९ प्रतिशत और केवल संगीत सुनने वालों में १९ प्रतिशत तक सुधार सामने आए।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण– संगीत का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संगीत की विविध विधाएं भिन्न भिन्न प्रकार से मनुष्य के मन, हृदय, चित्त एवं बुद्धि को सन्तुष्ट करती है, सुख देती है। जैसे किसी व्यक्ति को लय जिसे रिदम कहते हैं। वह ज्यादा समझ में आती है। वह उसमें तल्लीन हो उठता है। लय मनुष्य के भावों के आवेग को बढाती है जो सहृदय है, संवेदनशील है, उन्हें स्वर, स्वरों की मधुरता अथवा संगीत में कोई सुन्दर स्वर ताल की जगह हृदय को आन्दोलित कर जाती है। शास्त्रीय संगीत में हृदय को छूने की उसे तृप्त करने की क्षमता होती है वही लोकसंगीत में केवल मनोरंजन ही संभव है वह बुद्धि और हृदय को सन्तुष्ट नहीं करता। उसका प्रभाव छंड़िक होता है अर्थात कार्यक्रम चलने तक ही रहता है। शास्त्रीय संगीत में किसी कलाकर की प्रस्तुति बार–बार सुनकर भी वह हर बार नया प्रतीत होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति की मनोस्थिति के कारण होता है। संगीत के राग स्वराष्टक के स्वरों का एक ऐसा गीतात्मक विधान है जो एक नियति (मनःस्थिति) को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त है। संगीत में मन को एकाग्र करने की पूर्ण क्षमता है। मन शांत एवं तन्मय करने की क्षमता शास्त्रीय संगीत में ही है। जब कि लोक एवं भाव संगीत (गीत,ग़ज़ल,भजन) मनुष्य के मन में अनेक भाव निर्माण करते हैं तदानुसार मन एवं शरीर पर परिणाम होता है। लोगों का झूम उठना, बार बार तालियां बजाना इसी बात का संकेत देता हैं। शास्त्रीय संगीत मनुष्य की चंचल प्रवृत्तियों को एकदम शांत कर देता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने पर संगीत का प्रभाव मानव मन एवं मानव समाज पर अत्यन्त प्रभावी एवं कल्याणकारी होता है।

संगीत मनुष्य की सारी चिन्ताओं का निराकरण कर देता है। संगीत की विशेषता यह है कि आज स्वयं संगीत का प्रायोगिक न करें तब भी श्रोता बनकर आप उससे सुख प्राप्त कर सकते हैं ग्रेसीमूविच जी.आई.,सिडोरेनको,भी.(१९९५)। मानसिक एवं शारीरिक व्यथा से परेशान होकर मनुष्य जन अति व्याकुल हो जाता है। तब कोई दवा उसे वह सुख शांति नहीं दे पाती जो संगीत देता है। अर्थात् मन की उद्विग्नता को शांत करने में संगीत के स्वर अत्यन्त सक्षम है। मनोयोग भावों को सजीव और साकार रूप देकर उसे अत्यन्त आकर्षक रंजक बनाने का कार्य संगीत का ही है। संगीत मानव हृदय तथा बुद्धि को सन्तुलित रखने में योगदान करता है। संगीत कला मानव को दानव बनने से रोकती है। मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों को दूर करने में यह कला सहायक सिद्ध हुई है।

संगीत का दार्शनिक पक्ष–

दृश्यते अनेन इति दर्शनम, अर्थात जिसके द्वारा देखा जाए। देखने योग्य क्या वस्तु है? इसी जिज्ञासा में दर्शन की व्याख्या मानी जाती है। अनादि काल से भारत चिंतन परम्परा में यह जिज्ञासा रही है, इस जगत की सृष्टि कैसे हुई? आदि यहां भारतीय दर्शन का विचार करने से विषय आर्थिक दीर्घ होने की संभावना मात्र संगीत के दार्शनिक पक्ष का ही यहां उल्लेख करना श्रेयस्कर है।हमारे यहां सभी कलाएं विधाएं, शास्त्र एक ही तत्व की ओर जाते हैं। जिसे सच्चिदानंद, परब्रम्ह, परमात्मा चैतन्य आदि आदि कहा जाता है। इसीलिये संगीत को नादब्रम्ह, ब्रध्मानंद सहोदर या रसोवैस कहा। भारत में हर विषय, कला, शास्त्र के अध्ययन में आत्मोन्नति अथवा आत्म साक्षात्कार का साधन कैसे बने, यही दृष्टिकोण रहा है। संगीत शास्त्र पर मुख्य रूप से योगतंत्र, वेदांत, न्याय तथा सांख्य का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

संगीत शास्त्र का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है जिसका मुख्य विषय नाट्य है। नाट्य की सिद्धि में संगीत सबसे अधिक सहायक है। इसी की स्तुति से ग्रन्थ का आरम्भ पंचमवेद के रूप में नाट्यवेद की स्थापना करना, नाट्यवेद के लिए ऋगवेद से पाठ्य यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से गीत और अर्थवेद से रस को ग्रहण शुद्ध गीतको के उदाहरणों गीतों में दार्शनिक प्रभाव स्पष्ट है। संगीत का मूलाधार नाद

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

है। वह नाद समस्त विश्व में व्याप्त है। शब्द गुणाकमाकराम इस न्यायसूत्र के अनुसार शब्द आकाश का गुण है, वेदान्त दर्शन के अनुसार नाद ही ब्रम्ह है। संगीत दर्पण में नाद ही इस चराचर जगत का मूलकारण है।

नादेन व्यज्यते वर्णः पद वर्णात पदाद्वचः।
वचसो व्यवहारोदयं नादाधीनभिदं जगत्।

अर्थात् नाद से वर्ण, वर्ण से पद और पद से वाक्य बनता है। वाक्य से ही सम्पूर्ण जगत का व्यवहार संचालित होता है। अतः सारा संसार नाद के अधीन है। नाद के विषय में दार्शनिको ने अत्यन्त सूक्ष्म विचार दिया है।

नाद की चार अवस्थाएं होती हैं- परा, पश्यन्ती, मध्यमा और बैखरी। परा तथा पश्यन्ती नाद की अवस्थाओं का प्रत्यक्ष योगियों को होता है। परा नाद नाभि कमल के अन्तर्गत होता है। जिसे अनाहत नाद कहते हैं। यह नाद स्वयंभू है। परा नाद के ऊपर पश्यन्ती नाद है, यह परा नाद का प्रत्यक्ष कराने में समर्थ है। मध्यमा नाद हदय प्रवेश में रहता है। इस नाद के माध्यम से मनुष्य भाव तथा कल्पना जगत् में विचरण करता है। इस नाद में वर्णात्मक तथा ध्वन्यात्मक दोनों नाद विद्यमान रहते हैं। योगशास्त्र के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि ने यम, नियम, ध्यान, धारणा तथा समाधि आदि यौगिक क्रियाओं द्वारा नादब्रम्ह का प्रत्यक्ष किया। संगीत कला भी एक योग है, जो सिद्धि यौगिक क्रियाओं से प्राप्त होती है, वही सिद्धि संगीत साधना से भी प्राप्त होती है। संगीत साधक स्वर लय तथा नाद की एकाकारता में विलीन हो जाता है। तब उसका मन अन्तर्मुखी हो जाता है। ऐसी अवस्था में उसे बाह्य जगत का भान नहीं होता, और वह नाद की अखण्ड ध्वनि में लीन होकर अखण्ड आनन्द का भोग करता है।

संगीत का आध्यात्मिक पक्ष– संगीत कला का उद्गम भले ही मानव की सहज भावनात्मक एवं अदम्य प्रेरणाओं के अभ्यंतर हुआ हो, परन्तु उसका विकास एवं लालन-पालन धर्म के क्रोड (आवरण) में हुआ, इसमें कोई विवाद नहीं, धार्मिक अभिव्यंजना भारतीय ललित कलाओं की आधार भूमि रही है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार कला वह है, जो मुक्ति के लिए मार्ग बनाती है। जो कला केवल भौतिक विलास के लिए सुख के लिए माध्यम बने वह कला नहीं, कला का अन्तिम लक्ष्य भौतिक संसार से ऊपर उठकर ऐसी अवस्था को प्राप्त करना है, जिसमें भौतिक सुखों के लिए कहीं स्थान नहीं।

मानव जीवन का लक्ष्य आत्मलाभ है। आत्मलाभान्न परं विद्यते, मानव के आनन्दमय कोश द्वारा परमसत्व का साक्षात्कार करना ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है, संगीत इसी आत्मानन्द का माध्यम है। संगीत से हृदय के अन्तस की चेतना प्रबुद्ध हो जाती है, तथा अन्तस अलौकिक आनन्द एवं दिव्यानुभूति का अनुभव करता है। संगीत की साधना करने वाले इस अनुभूति का अनुभव करते हैं। वैदिक समय में यज्ञों के अन्तर्गत सामगान का उद्देश्य जनमनोरंजन न होकर विश्व को संचालित करने वाली भव्य शक्ति का आराधन होता था। सामगान उदात्त भावनाओं को आन्दोलित करने वाला था। योगियों की दृष्टि में समस्त सृष्टि का मूल नाद में निहित था। अतः नाद की विविध विधियों का रहस्य परमानन्द में विलीन होने में है। स्थूल के माध्यम से सूक्ष्मतम का साक्षात्कार भारतीय दर्शन की विशेषता का आदर महर्षियों, दार्शनिकों, भक्तजनों द्वारा बराबर किया जाता रहा है। तात्पर्य यह है कि चंचल मनःप्रवृत्तियों का निराकरण कर चित्त की एकाग्रता से मानव मंगल की सिद्धि यही संगीत संबंधी भारतीय दृष्टिकोण है।

संगीत का व्यवसायिक पक्षः–

भारतीय संगीत में व्यवसायिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, चाहे वह शास्त्रीय, उपशास्त्रीय या सुगम संगीत हो, अर्थात् यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय की लगभग सभी विधाओं के कलाकार व्यवसायिक हो गये हैं। पहले भी संगीत का अपना व्यवसायिक पक्ष था, किन्तु कला की प्रधानता सर्वोच्च थी, अर्थ की प्रधानता नगण्य थी। पहले के समय में गायक, वादक ही संगीत के व्यवसाय से जुड़े हुए थे जबकि वर्तमान में मंच पर प्रस्तुत होने वाले कलाकारों के अतिरिक्त अनेक लोगों को व्यवसाय प्राप्त होता है। जैसे कार्यक्रम आयोजक, प्रायोजक, मंचसज्जा, व्यवस्थापक, विज्ञापन आदि के माध्यम से अनेक लोगों को संगीत के द्वारा व्यवसाय प्राप्त होता है, यह व्यवस्था आज से सौ साल पूर्व नहीं थी। कलाकार का गाना बजाना छोटे स्तर तक ही सीमित था। उस समय महिलाओं के द्वारा मंच प्रदर्शन की प्रथा नहीं थी। वर्तमान में संगीत क्षेत्र में प्रवेश करने वाला प्रत्येक कलाकार अपना भविष्य निर्धारण करता है एवं उसी के अनुरूप संगीत का विषय चुनता है।

अंग्रेजी शासन काल के बाद से भारत में शास्त्रीय संगीत की स्थिति और अधिक सुदृढ़ हुई है, संगीत शिक्षा का प्रचार-प्रसार सर्वत्र हुआ है। स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा व्यापक रूप में गुणीजनों द्वारा दी जा रही है, अतः आज व्यवसाय के रूप में संगीत को संभ्रात परिवार के लोग भी स्वीकार कर रहे हैं। इस प्रकार से संगीत के व्यवसायिक पक्ष का जब हम गहन अध्ययन करते हैं तब पाते हैं कि आकाशवाणी, टेलीविजन और और विभिन्न चैनलों के द्वारा भी संगीत के कार्यक्रमों के माध्यम से आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में संगीतज्ञों हेतु विभिन्न पद सृजित किये जाते हैं, जैसे हारमोनियम वादक, तबला वादक, वायलिन और सारंगी वादक इत्यादि। इन वादकों के द्वारा कार्यक्रम में संगति देकर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की भांति लोकसंगीत एवं उपशास्त्रीय संगीत के कलाकारों को भी आर्थिक लाभ होता है। ये कलाकार भी आकाशवाणी से जुड़े होते हैं।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि संगीत व्यवसाय की दृष्टि से वर्तमान में बहुत आगे बढ़ चुका है। इस व्यवसाय में कई तरह के व्यवसाय के लोग भागीदार हुए हैं और शास्त्रीय संगीत के माध्यम से अनेक परिवारों की जीविका चल रही है।

प्रत्येक कला का मनुष्य के जीवन में विशेष स्थान है। संगीत भी कला है। मानव ही क्या सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड संगीत से प्रभावित है। मानव जीवन से सम्बंधित प्रत्येक पहलू संगीतमय है। जन्म से मृत्यु तक जितने भी संस्कार मानव जीवन से सम्बंधित हैं, सब का सम्बन्ध संगीत से किसी न किसी तरह से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रहता ही है। प्रत्येक संगीत में समय, त्यौहार, परिस्थिति, जगह के अनुसार विभिन्नता रहती है। परन्तु संगीत के बिना कोई कार्य नहीं होता। संगीत को हम उच्च श्रेणी की कला कहते हैं। इस उच्चस्तरीय कला के माध्यम से मानवीय जीवन के समग्र पहलुओं पर इसका प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है। मानवीय संदर्भ में उसके आनन्द की अवधारणा संगीत के पहलुओं पर छिपा हुआ है अतः संगीत मानवीय उत्कर्ष के संदर्भ मे अनुपम वरदान सिद्ध हुआ है।

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

संदर्भः—

१.मधुरिमा अंक,दैनिक भास्कर,दिनांक-१८ मार्च २०१५,पृष्ट क्र.-२
२.संगीत एवं मनोविज्ञान, डॉ. किरण तिवारी,प्रकाशन २००८,पृष्ट क्र.-६२
३.संगीत दर्शन,विजय लक्ष्मी जैन,राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर-१९८९,पृष्ट क्र.-५५
४.संगीत और मनोज्ञान,डॉ.बसुधा कुलकर्णी,पृ. क्र.-५०
५.संगीत चिकित्सा,डॉ.सतीश वर्मा प्रकाशन- राधा पब्लिकेशन,दिल्ली-२००४,पृ-१८०
६.शब्दब्रह्म नादब्रह्म, आचार्य श्रीराम शर्मा,बांगमय१९,अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा,पृष्ट क्र.-२३
७.,शास्त्रीय संगीत का विकास,डॉ. अमित शर्मा पृ. क्र.-१३७।
८.हेल्दी स्वस्थ २०१५,दैनिक भास्कर,गुरूवार १ जनवरी २०१५,पृष्ट १३।
९.जे.ऐन्ने एवं सहयोगी(१९९९). इमोशनल रिस्पॉन्स टू प्लीजेन्टएनेचर न्यूरोसाइंस २ए ३८२ दृ ३८७
१०.ग्रेसीमूविच जी.आई.,एवं ईन्श,ई.ए.(१९९९).एप्लीकेशन ऑफ म्यूजिक थेरेपी इन मेडिसिन, Meditzinskíe novosti. 7:17–20
११.ग्रेसीमूविच जी.आई.,एवं सिडोरेनको,वी.(१९९५). स्ट्रेस रेडयुसिंगइफेक्ट ऑफ मेडिकल रेज़ोनेन्स थेरेपी म्यूजिक-स्टडी प्रजेन्टेड ऐट दा वर्ल्ड ओर्गनाईजेशन कॉनफ्रेन्स ऑन सोसायटी, स्ट्रेस एण्ड हेल्थ, Naturmedizin aktuell, 96

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org